Historicity Research Journal
Volume 1 | Issue 12 | Aug 2015 ISSN:- 2393-8900

Research Article

उपन्यांसकार भीष्म साहनीः अधुनातन परीप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

चंदू खंदारे

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, गांधीग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय, गांधीग्राम, जि.डिव्हीगुल (TN)

प्रस्तावना :

विचारधारा और साहित्य सदा एक दूसरे के लिए अपरिहार्य रहे हैं। विचारधारा साहित्य की रीढ है तथा साहित्य विचारधारा का आत्मबल। विचारविहीन साहित्य सामान्य जनता के जीवन में अपना स्थान नहीं बना सकता, उसी प्रकार आत्मबलविहीन विचारधारा भी सामान्य जनता का बौधिक हथियार नहीं बन सकता। विचारधारा और साहित्य दोनों के मेल से जो साहित्य रचित होता है वही जनसाधारण के मन का सामर्थ्य रखता है। इस प्रकार विचारधारा में सामाजिक परिवर्तन लाने की क्षमता होती है।

मार्क्स की यह मान्यता है कि "विचारधारा का अपना कोई स्वतंत्र इतिहास नहीं है वह मुलतः सामाजिक जीवन का इतिहास है। अतः मार्क्स के लिए विचारधारा शब्द अपने सतही अर्थ बोध से कहीं अधिक एक गहरे अर्थबोध का शब्द हैं जिसके अंतर्गत इन्द्रिय-संवेदना और भाव दोनों की ही स्थिति है। ऐसी स्थिति में मार्क्स द्वारा साहित्य या कला को विचारधारा का ही रुप मानता संगत है।" (साहित्य सिद्धान्त और अवधारणाएँ - अरुण प्रकाश मिश्र : पृ.४८) अतः यह कहा जा सकता है कि, लेखक जिस सीमा तक अपनी विचारधारा से साहित्य को जोड सके, वहाँ उतना ही परिणात्मक सहसम्बन्ध होगा। दूसरे शब्दों में कहें तो यह सम्बन्ध लेखक की दृष्टि और क्षमता पर निर्भर करता है।

भीष्म सहानी के कथा साहित्य का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि उनपर मार्क्सवाद का प्रभाव था। वह अपनी आत्मकथा 'आज के अतीत' में स्वीकार करते है कि- "वामपन्थी विचारधारा का असर मुझ पर भी हुआ था मेरे एक अध्यापक मित्र वी.डी.चोपडा कम्युनिस्ट कार्यकर्ता थे और मुझे अक्सर वाम साहित्य पढने के लिए देते रहते थे।" (आज के अतीत : पृ.१२६) उनके इस कथन से उनकी चेतना का विकास और चिंतन क्षमता स्पष्ट होती है। अपने अनुभवों की चर्चा करते हुए भीष्म साहनी कहते है- "कम्युनिस्ट विचारधारा से प्रभावित व्यक्ति की दृष्टि निश्चय ही सामाजिक स्तर पर अधिक स्पष्ट और सटीक होती है। वह साम्प्रदायिक नहीं होता, जातिभेद में विश्वास नहीं रखता, न रंग भेद में हमारे समाज में इस दृष्टि से सबसे विश्वसनीय लोग वाम विचारधारा को माननेवाले लोग रहे है- और आज भी है। उनकी मानसिकता जनजीवन से जुडने की मानसिकता होती है। उनके लिए आर्थिक-सामाजिक सरगर्मियों को लाने की मुख्यतः एक ही कसौटी होती है कि वह मेहनतकश जनता हित में है या नहीं है। उनके चिन्तन का धरातल ही जनहित होता है। इसमें उनकी गहरी निष्ठा होती है।. उनकी इस निष्ठा के अनुरुप ही उनकी सोच होगी। कम्युनिस्ट विचारधारा में विश्वास करनेवाले लोग, स्वार्थ हित को प्राथमिकता नहीं देते। धन लोलुप नहीं होते। आम तौर पर कम्युनिस्ट कार्यकर्ता बडी सादा और संयम की जिन्दगी गुजारते है। ऐसा मैने देखा है।" (आज के अतीत : पृ.१५८)

भीष्म सहानी का वर्गीय दृष्टीकोण हमें उनका उपन्यास 'झरोखे' में दिखाई देता है। झरोखे उपन्यास में तुलसी एक महत्वपूर्ण पात्र है। भीष्म साहनी ने तुलसी के बहाने उस पूँजीवादी मानसिकता का चित्रण किया है, जिसमें गरीब-गरीब ही रह जाता है और अमीर आगे बढता जाता है। तुलसी सारी जिन्दगी संघर्ष करके नौकर की हैसियत से मुक्ति पाना चाहता है वह कहता है- "क्या सारी उम्र मैं बरतन ही माँजता रहूँगा।" (झरोखे : पृ.७९) परंतु उसे यह मुक्ति नहीं मिल पाती। पुनः औषधालय से लौटकर उसी घर में रोजगार पाने की लालसा में आता है। परंतु इस बार अकेले नहीं, साथ में अपने बेटे वेद को लेकर आता है। "वेद को लाया हूँ, इसे नौकर रख लो। आप पिताजी से कहो छोटे बाबू, मैं कहूँ तो पिताजी गुस्सा हो जाते है। मैं भी कोई छोटा-मोटा काम इधर ढुँढ लूँगा। पिताजी की दया बनी रहे।" (झरोखे : पृ.१३०)

इस प्रकार हम देखते है कि तुलसी जिस चीज से सारी जिंदगी जूझता रहता है, अंत में उसका बेटा भी उसी स्थिति को प्राप्त करता है।

लेखक ने तुलसी के बहाने जो विचारदृष्टि दी है, वह सार्वभौमिक है। भीष्म साहनी ने 'झरोखे' उपन्यास में अमीर-गरीब के बीच स्पष्ट विभाजक रेखा खींची है। इस उपन्यास में भीष्म साहनी मार्क्सवादी विचारधारा के माध्यम से जो कहना चाहते है उसमें वे सफल हुए है।

भीष्म साहनी पर मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव होने कारण उनकी सहानुभूति सर्वहरा वर्ग के साथ रही है। 'बसंती' उपन्यास में उन्होंने जिन पात्रों की सृष्टि की है, वे पंजाब, राजस्थान, हरियाणा और उत्तर प्रदेश से आए राज मजदूर है। ये मजदूर दिल्ली महानगर के बीच रमेश नगर के बगल में झोपडी बनाकर रहते है। लेखक भीष्म साहनी इन्हीं मजदूरों के बीच खडा होकर इनके उत्थान और पतन की कहानी कहते हैं।

भीष्म जी की विचारधारा पर मार्क्सवादी प्रभाव को उनकी कहानियों में देखा जा सकता है। 'पाली' उनका एक कहानी संग्रह है। 'पाली' जिस नाम से संग्रह है, एक अबोध और मासूम बालक है। परिस्थितीयों के काम चक्र मे फंसकर पाली को पहले हिंदू से मुसलमान बनाया जाता है, फिर मुसलकान से हिंदू बनाया जाता है। पंरतु पाली मुस्लिम संस्कारों से मुक्त नहीं हा पाता। उसके मुस्लिम संस्कार का खत्म न होना कई प्रश्न खडे करता है। पाली के दोनों तरफ हिंदू और मुस्लिम पंडित-मुल्लाओं का घेरा है, जो अपने धर्म और मजहब से बांधने की कोशिश करते है, जब की उसकी हिंदू-मुस्लिम माताएँ ममता से छलकता हृदय लिए जो सिर्फ बेटे की तरह ही स्वीकार करती है। इस कहानी से यह स्पष्ट होता है कि भीष्म साहनी धर्म या मजहब के पंजे से मुक्त मनुष्य की कल्पना करते है, ठीक उसी तरह कबीर ने कभी आवाज उठाई थी जिसकी गुंज आज सुनाई पडती है।

इस प्रकार भीष्म साहनी के पूरे कथा-साहित्य का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि उनकी रचनाओं में मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट रुप से दिखाई देता है।